महाकाव्यों में प्राचीन भारतीय राजनीति का समालोचनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन

ममता कुमारी
गवेषिका, इतिहास विभाग,ल0ना0मि0विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल– mamtascholar121@gmail.com

संक्षिप्त सार

विश्व साहित्य के प्राचीनतम महाकाव्यों की तुलना में रामायण व महाभारत उत्कृष्ट कृति हैं। इनमें राजनय की उपयोगिता व उन्मुक्तियों से सम्बन्धित उदाहरण मिलते है। महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में राम ने लंका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा के पूर्व अंगद ने नीति के अनुसार समझौते का पूर्ण प्रयास किया था।रावण द्वारा हनुमान के लंका दहन के कारण प्राणदण्ड के आदेश देने पर रावण के भाई विभीषण ने व्यवधान डालते हुए कहा था कि शास्त्रानुसार दूत का वध नीति विरोधी है, उसे दण्डित नहीं किया जा सकता, चाहे वह कैसा ही अपराध क्यों न करे। विभीषण को अपने पक्ष में करना तथा रावण के दरबार में गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर लेना, कुशल राजनयिक योग्यता का परिचायक है। शुक राक्षस द्वारा राम की सेना का भेद पता लगाने के लिये आने पर उसे पकड़ लिया गया, परन्तु राम ने उसे छोड़ दिया क्योंकि शुक ने अपने को रावण का दूत घोषित कर दिया था। इस प्रकार इस काल में दूत भेजने की प्रथा थी तथा इनका मुख्य कार्य सन्देशों का लाना, ले जाना तथा जासूसी करना था। अयोध्या काण्ड में राजा दशरथ राम को परामर्श देते हैं कि राजा को दूतों के माध्यम से सत्य का पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिये। तुलसीदास ने रामचरित मानस में साम, दान, भेद और दण्ड चारों उपायों का वर्णन किया है।

शब्द संकेत : महाकाव्य, राजनयिक, योग्यता, तुलसीदास और परामर्श ।

विषय प्रवेष :

रामायण और महाभारत महज पौराणिक कथाएँ नहीं हैं। इनमें प्राचीन काल के सबसे विस्तृत और परिष्कृत राजनीतिक चिंतन के अंश समाहित हैं। आधुनिक राजनीति विज्ञान के औपचारिक विषय के रूप में उभरने से बहुत पहले ही, इन ग्रंथों में अच्छे शासक के गुणों, राज्य की संरचना और प्रजा के प्रति राजा के कर्तव्यों जैसे प्रश्नों पर विचार–विमर्श किया गया है । इस राजनीतिक दर्शन के केंद्र में राजधर्म की अवधारणा है । राजा का पवित्र कर्तव्य जो नैतिकता, शासन, न्याय और कल्याण को राजनीतिक जीवन के एक ही ढांचे में समाहित करता है।

राजधर्म, जो संस्कृत शब्दों राजा (राजा) और धर्म (कर्तव्य या धार्मिकता) से मिलकर बना है, शासक द्वारा निभाए जाने वाले नैतिक, राजनीतिक और प्रशासनिक दायित्वों के संपूर्ण समूह को संदर्भित करता है। प्राचीन भारतीय चिंतन में, राज्य–प्रशासन का संपूर्ण अनुशासन इसी अवधारणा पर केंद्रित था , और इसे इतना महत्वपूर्ण माना जाता था कि इसका पालन न करने से समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता था। यह विचार केवल सत्ता धारण करने के बारे में नहीं थां, बल्कि सत्ता का प्रयोग नैतिक रूप से वैध, आध्यात्मिक रूप से आधारित और जन कल्याण की दिशा में निर्देशित तरीके से करने के बारे में था।

विश्व साहित्य के प्राचीनतम महाकाव्यों की तुलना में रामायण व महाभारत उत्कृष्ट कृति हैं। इनमें राजनय की उपयोगिता व उन्मुक्तियों से सम्बन्धित उदाहरण मिलते है। महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में राम ने लंका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा के पूर्व अंगद ने नीति के अनुसार समझौते का पूर्ण प्रयास किया था।रावण द्वारा हनुमान के लंका दहन के कारण प्राणदण्ड के आदेश देने पर रावण के भाई विभीषण ने व्यवधान डालते हुए कहा था कि शास्त्रानुसार दूत का वध नीति विरोधी है, उसे दण्डित नहीं किया जा सकता, चाहे वह कैसा ही अपराध क्यों न करे। विभीषण को अपने पक्ष में करना तथा रावण के दरबार में गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर लेना, कुशल राजनयिक योग्यता का परिचायक है। शुक राक्षस द्वारा राम की सेना का भेद पता लगाने के लिये आने पर उसे पकड़ लिया गया, परन्तु राम ने उसे छोड़ दिया क्योंकि शुक ने अपने को रावण का दूत घोषित कर दिया था। इस प्रकार इस काल में दूत भेजने की प्रथा थी तथा इनका मुख्य कार्य सन्देशों का लाना, ले जाना तथा जासूसी करना था। अयोध्या काण्ड में राजा दशरथ राम को परामर्श देते हैं कि राजा को दूतों के माध्यम से सत्य का पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिये। तुलसीदास ने रामचरित मानस में साम, दान, भेद और दण्ड चारों उपायों का वर्णन किया है।

महाभारत हमारे प्राचीन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन का एक प्रमुख साधन है। रामायण की भांति महाभारत भी नीतिशास्त्र की ऐसी पुस्तक थी जिसका अध्ययन कर राजा स्वयं के राज्य के हितों की रक्षा के लिये कार्य कर सकता था। गीता को विद्वानों ने नीतिशास्त्र, नीति मीमांसा, कर्तव्य शास्त्र आदि अनेक नाम दिये हैं। गीता के उपदेश

राजनीति के उच्चतम आदर्श के रूप में देखे जाते हैं। इस समय तक राजनय विकसित हो चुका था। महाभारत में दूतों का वर्णन मिलता है। शासन की सफलता के लिए दूतों और गुप्तचरों की आवश्यकता पर इसमें बल दिया गया है। दूत केवल वही व्यक्ति नियुक्त हो सकता था जो कुलीन वंश का, प्रिय वचन कहने वाला, अच्छी स्मृति वाला और यथोक्तवादी हो। शांतिपर्व में वर्णित है कि दूतों के माध्यम से राज्य को अपने शत्रु और मित्र दोनों ही पक्षों के अभिलाषित विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। संजय ने विभिन्न अवसरों पर दूत का कार्य किया था। पांडवों की ओर से श्रीकृष्ण एक विशेष दूत बनकर कौरवों के राजा दुर्योधन के दरबार में दोनों पक्षों के मध्य समझौता कराने गये थे, जिससे कि भविष्य में संग्राम न हो। द्रोपदी द्वारा ऐसे असम्भव कार्य के औचित्य के सम्बन्ध में पूछने पर श्रीकृष्ण ने जो उत्तर दिया वह राजनय से परिपूर्ण था। श्रीकृष्ण का मत था कि भले ही वे युद्ध को टालने में असफल रहे, परन्तु वे विश्व को दिखा देंगे कि वे न्यायोचित हैं तथा कौरव अन्याय कर रहे हैं। इसी सन्दर्भ में उन्होंने कहा था कि–मैं तुम्हारी बात को कौरवों के दरबार में अच्छी प्रकार से रखूंगा और प्राणप्रण से यह चेष्टा करूंगा कि वे तुम्हारी मांग को स्वीकार कर लें। यदि मेरे सारे प्रयत्न असफल हो जायेंगे और युद्ध अवश्यम्भावी होगा, तो हम संसार को दिखायेंगे कि कैसे हम उचित नीति का पालन कर रहे हैं और वे अनुचित नीति का, जिससे विश्व हम दोनों के साथ अन्याय नही कर सके। इस सन्दर्भ में श्रीकृष्ण ने कहा था कि "धष्तराष्ट्रं के समक्ष मैं न केवल अपने परन्तु कौरवों के हितों की भी रक्षा करूंगा।"

युद्धनीति एवं राजनीति के कृष्ण एक महान ज्ञाता थे। धर्मराज युधिष्ठिर व अर्जुन को दिये गये नीति प्रवचन, कृष्ण के योग्य एवं आदर्श राजदूत होने के द्योतक हैं। भीष्म पितामह ने दूत की योग्यताओं का वर्णन किया है। उनके अनुसार वह पुरुष जो दक्ष, प्रिय भाषी, यथोक्तवादी और अच्छी स्मृति वाला हो वही दूत नियुक्त किया जा सकता है। राजा को किसी भी परिस्थिति में दूत का वध नहीं करचा चाहिये।दूत को मारने वाला मंत्रियों सहित नरकगामी होगा। भीष्म पितामह द्वारा अन्तिम क्षणों में दिये गये वचन राजा तथा राजनय पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। महाभारत में उच्च साध्य की प्राप्ति में सभी प्रकार के साधनों के उपयोग का समर्थन है। शांतिपर्व राजनय और युद्ध व शान्ति के परामर्श से भरा पड़ा है। वनपर्व में विजय प्राप्ति हेतु सभी साधन मान्य बताये गये हैं। क्षत्रिय धर्म नैतिकता के ऊपर तथा परे है।ये दोनो महाकाव्य शासन, राजनय, युद्ध और शांति पर लिखे गये महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। इस प्रकार रामायण और महाभारत काल में राजनय का संस्थागत स्वरूप उभर आया था। रामचन्द्र दिक्षित के अनुसार राजनय इस समय पूर्ण विकसित हो चुका था।

राजधर्म को कई पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांतों से अलग करने वाली बात यह है कि यह राजनीति को नैतिकता से अलग नहीं करता। इस ढांचे में, राजनीतिक शक्ति (क्षत्र तेज) को हमेशा आध्यात्मिक ज्ञान (ब्रह्म तेज) द्वारा संतुलित किया जाना चाहिए। नैतिक आधार के बिना शासन करने वाला शासक सच्चा राजा नहीं होता, वह अत्याचारी होता है। नैतिकता और राजनीति का यह एकीकरण भारतीय महाकाव्यों में राजनीतिक चिंतन की परिभाषित विशेषता है।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का अवलोकन किया गया है जिसमें :

भंडारकर, बी0 .आर.0 (1929) के अनुसार,यह कहना गलत है कि भारतीयों ने राजनीति विज्ञान के अध्ययन को धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र के अधीन कर दिया था और इसे ज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा के रूप में कभी विकसित नहीं किया। उनका मानना है कि कौटिल्य के समय में हिंदू सोच ने विज्ञान–निर्माण या भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक संस्कृति, दोनों को समान महत्व दिया।

घोषाल, के.0एन.0(1959) का मानना है कि हिंदू उन लोगों की श्रेणी में आते हैं जिन्होंने राजनीतिक विचारों की मौलिक प्रणालियों के संस्थापकों के रूप में इतिहास के पन्नों पर अपनी छाप छोड़ी है।

पालमर, एन0.डी0(1971) के अनुसार, प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में कई ऐसे विषयों पर चर्चा की गई है जो पश्चिमी दुनिया के राजनीतिक सिद्धांत में बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। इनमें राज्य की प्रकृति और उत्पत्ति, राज्य के प्रकार, राज्य और समाज के संबंध, सरकार के रूप, राजत्व की उत्पत्ति, राजा के कर्तव्य, शाही अधिकार और उसकी सीमाएं, सत्ता की राजनीति, कूटनीति और प्रशासन, प्राकृतिक अवस्था, सामाजिक समझौता और संप्रभुता (शायद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी) शामिल हैं।

अध्ययन पद्धति :

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत तत्कालीन पत्रा–पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

हाभारत का शांति पर्वः

शासन–प्रबंध :

भारतीय महाकाव्यों में राजनीतिक विचारों का सबसे सघन भंडार शांति पर्व महाभारत का बारहवां अध्याय है। 365 अध्यायों और 14,000 से अधिक श्लोकों में फैला यह ग्रंथ कुरुक्षेत्र के विनाशकारी युद्ध के बाद की घटनाओं पर आधारित है । पांडवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर ने युद्ध तो जीत लिया लेकिन भारी जनहानि के कारण वे गहरे शोक और अपराधबोध से ग्रस्त हो गये । वे सिंहासन त्यागकर वनवास में संन्यासी बन गये ।

इसी समय, कुरु वंश के मुखिया, मरणासन्न भीष्म, बाणों से बनी अपनी प्रसिद्ध शय्या पर लेटे हुए, राजत्व, शासन, विधि और नैतिकता पर एक विस्तृत प्रवचन देना शुरू कर दिये । कृष्ण और ऋषि व्यास, नारद और अन्य युधिष्ठिर से आग्रह किये कि वे भीष्म के पास जाकर उनसे राजा के कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करें, इससे पहले कि महान योद्धा का निधन हो जाए। इसके बाद जो कुछ हुआ वह किसी भी प्राचीन ग्रंथ में राजनीतिक दर्शन के सबसे व्यापक विवेचनों में से एक है।

शांति पर्व को परंपरागत रूप से तीन उपखंडों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक शासन और कर्तव्य के एक अलग आयाम को संबोधित करता है। पहला, राजधर्म अनुशासन पर्व (अध्याय 1–130), सामान्य परिस्थितियों में राजाओं और नेताओं के कर्तव्यों को निर्धारित करता है। दूसरा, अपद्धर्म अनुशासन पर्व (अध्याय 131–173), आपात स्थितियों और संकटों के दौरान नैतिक आचरण से संबंधित है। तीसरा, मोक्ष धर्म पर्व (अध्याय 174–365), मुक्ति, आत्मा के स्वरूप और सांसारिक कर्म और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के बीच संबंध जैसे आध्यात्मिक प्रश्नों की ओर उन्मुख होता है।यह संरचना स्वयं ही बहुत कुछ प्रकट करती है। यह हमें बताती है कि प्राचीन भारतीय विचारकों ने शासन को कई स्तरों पर संचालित होते देखा व्यावहारिक, परिस्थितिजन्य और पारलौकिक। एक अच्छे शासक को इन तीनों स्तरों में सक्षम होना आवश्यक था।

भीष्म की राजा के कर्तव्यों पर शिक्षाएँ:

भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को दी गई सलाह में विषयों की एक असाधारण श्रृंखला शामिल है। हालाँकि, इसके मूल में कई प्रमुख सिद्धांत हैं जो यह परिभाषित करते हैं कि एक धर्मी राजा को कैसा होना चाहिए और क्या करना चाहिए।राजा जनता का सेवक होता है। भीष्म की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक यह है कि प्रजा का कल्याण शासक के कल्याण से सर्वोपरि होना चाहिए । राजा अपनी प्रजा का स्वामी नहीं होता, बल्कि उनका रक्षक और सेवक होता है। महाभारत में कहा गया है कि राजा को अपनी प्रजा के लिए माता के समान होना चाहिए, जो उनके हित में कोई भी बलिदान देने को तैयार हो। प्रजा की खुशी ही एक सफल शासन का सच्चा मापदंड है। भीष्म स्पष्ट रूप से चेतावनी देते हैं कि जो राजा अपनी प्रजा की रक्षा करने में विफल रहता है, वह घोर पाप करता है।

अनुशासन पर्व में राजनीतिक सिद्धांतों पर चिंतन महाभारत को राजनीतिक चिंतन का आधार स्तंभ व महत्वपूर्ण ग्रंथ में से एक माना जाता है। महाभारत में उत्तर वैदिक काल के बाद भारत की राजनीतिक सामाजिक दशा का वर्णन मिलता है। इसमें राजनीति और धर्म के नियम दिए गए हैं यह आदर्श राज्य की कल्पना, स्थापना व उसको व्यवहार में परिणत करने का प्रयास करती है। आज जब लोकतंत्र में राजनीतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है तो आवश्यकता है हम अपने महत्वपूर्ण धार्मिक राजनीतिक ग्रंथों का पुनरावलोकन करें और वहां से कुछ सिद्धांतों को अंगीकार करें जिससे समुचित राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना हो सके। कहा जाता है" जिस राज्य में कोई राजा नहीं होता, वहां धर्म स्थित नहीं रह सकता।" राजनीतिक धार्मिक व्यवस्था स्थिर न रहने से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को खा जाता है। महाभारत का शांति पर्व और राजधर्मानुशासन अध्याय राजनीति विचारों की उच्चतम विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति है। भीष्म द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धांतों को वास्तविक स्वरूप में नैतिक मान्यता प्राप्त है। युधिष्ठिर का राज धर्म भीष्म के मूल राजनीतिक विचारों की व्याख्या है जो अन्य जीवित प्राणों के लिए जूठन है। राजधर्म की व्याख्या करते हुए भीष्म कहते हैं कि राजा को चारों वर्णों के धर्म की रक्षा करनी चाहिए। धर्म से विचलित व्यक्ति को बाहुबल से निग्रह करें। मानव समाज की कल्याण के लिए चारों वर्ण स्वधर्म पालन करें। भीष्म राजा की तुलना गर्भवती स्त्री से करते हैं जो अपने रुचि का त्याग कर गर्भस्थ शिशु के पोषण के लिए सब कुछ करती है। भीष्म ने राज्य पुनर्निर्माण की नीति महाभारत के बाद की परिस्थितियों के लिए प्रतिपादित की थी। राष्ट्र निर्माण में इसका विशेष महत्व है। भीष्म छह माह तक मृत्यु शैय्या पर लेटे रहें। यह सिर्फ सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा मात्र नहीं था बल्कि राज्य को सुरक्षित और व्यवस्थित होते देखना था। भीष्म कहते हैं कि राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य राजा का विधिवत राज्याभिषेक करना है जो महाभारत काल में आधुनिक प्रजातांत्रिक मूल्यों के होने की पुष्टि करता है। राजा रहित राज्य दुर्बल होता है और दस्यु आक्रमण से ग्रस्त रहता है। भीषण नरसंहार से द्रवित युधिष्ठिर ने अग्निहोत्र बनने की इच्छा प्रकट की तब व्यास जी ने समझाया सर्वस्व त्याग कर निधन हो जाना मुनियों का धर्म है राजा का नहीं। प्रजा के अभाव में राजा नहीं हो सकता, राजा नहीं है तो राज्य नहीं होगा, राज्य नहीं होगा तो राजा धर्म कैसे करेगा। अतः प्रजा रक्षा राजा का परम धर्म है। महाभारत में 37 आमात्य, 8 मंत्री की संख्या बताई गई है। आमात्य को राजा के मित्र, सहयोगी, सलाहकार व दरबारी के रूप में निरूपित किया गया है जबकि मंत्री विद्या में प्रवीण, विनयशील, धर्म अर्थ में कुशल और सरल स्वभाव वाले होने चाहिए। राजा की मंत्री परिषद में समाज के प्रत्येक वर्ग का उचित प्रतिनिधित्व होता था जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र शामिल होते थे। मंत्री परिषद का परामर्श अनिवार्य होता था। महाभारत में राजा की कर्तव्य निम्नलिखित बताए गए हैं प्रजा के धर्मानुकूल शासन करना, प्रजा के सुख की वृद्धि करना, निरंतर मंत्र चिंतन करना, शत्रु राजाओं से युद्ध करना, दुर्ग की रक्षा करना आदि। महाभारत के शांति पर्व और अनुशासन पर्व में यत्र तत्र बिखरे राजनीतिक सिद्धांतों का बिंदुवार निरूपण इस प्रकार है– • एक राजा को राजकीय मामलों में भावनात्मक नहीं होना चाहिए। उसके निर्णय बौद्धिक और आवश्यकतानुसार कठोर भी होने चाहिए। • राजकाज की क्रियाविधि व गतिविधि को गोपनीय रखा जाना चाहिए। कोई भी गुप्त योजना जनता के संज्ञान में तब तक नहीं आनी

चाहिए जब तक की उसका क्रियान्वयन न कर दिया जाए । बुराइयों को समय पर समाप्त कर दिया जाना चाहिए अन्यथा बहुत ही घातक सिद्ध हो सकती है। शत्रु को समाप्त करने का कोई भी प्रयास अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर छलपूर्ण तरीका भी अपनाया जा सकता है। • जन भावनाओं का सम्मान करते हुए सावधानीपूर्वक शासन का संचालन किया जाना चाहिए ।

निष्कर्ष :

वर्तमान राजनीति और मानवीय समाज अनेक प्रकार से दोषों से ग्रस्त है। राजनीति में शासक में अपेक्षित योग्यता एवं गुणों का अभाव है जिससे शासन व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित नहीं हो रही है। मंत्री और सांसद आरोपों में लिप्त हैं। भ्रष्टाचार एक आम बात है। राजनीति में योग्यता की बजाय जाति धर्म, क्षेत्र, पार्टी आदि के आधार पर चयन किया जाता है वही दूसरी ओर नैतिकता के क्षेत्र में व्यक्ति के नैतिक चरित्र का पतन हो रहा है इंद्रिय सुखों को प्राथमिकता दी जा रही है भोगवादी जीवन शैली का वर्चस्व है, व्यक्ति स्वार्थी हो गया है। मानव संवेदना, करुणा, संयम, दया यह जैसे गुण पतन की ओर अग्रसर है। वर्तमान मानव समाज एवं राजनीति को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है कि हम महाभारत के अनुशासन पर्व को पथ प्रदर्शक के रूप में देखें। इसके लिए राजनीति में शासकों का योग्यता, दक्षता नैतिक चरित्र के आधार पर चयन करें। जातिवाद, भाई भतीजावाद से बाहर निकल कर योग्यता को वरीयता दें। शासन और सरकार को उत्तरदायी और जवाबदेह बनाने के विभिन्न साधनों का प्रयोग करें। इसमें रामायण तथा महाभारत के राजनीतिक सिद्धांत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नैतिक स्थान के लिए हमें अनुशासन पर्व में वर्णित नैतिक मूल्यों को अपनाने की जरूरत है समग्र समाज की भलाई के लिए वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को आत्मसात करने की जरूरत है। रामायण तथा महाभारत में वर्णित राजनीतिक विचारधाराओं, नैतिक मूल्यों, शिक्षाओं का महत्व आधुनिक राजनीति में उसकी उपयोगिता वर्तमान संदर्भ में अति महत्वपूर्ण है।

संदर्भ स्रोत :

1. भंडारकर, बी0.आर0 (1929) सम आस्पेक्ट्स ऑफ एंशिएंट इंडियन पॉलिटी (प्राचीन भारतीय राजनीति के कुछ पहलू), बनारस ।घोषाल, यू0.एन0. (1959)ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन पॉलिटिकल आइडियाज (भारतीय राजनीतिक विचारों का इतिहास), कलकत्ता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
2. पालमर, एन0.डी0 (1971)भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, हॉटन मिफ्लिन, ।
3. गुप्ता, आर0सी0 (2005) ग्रेट पॉलीटिकल थिंकर ईस्ट एंड वेस्ट लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एजुकेशनल पब्लिशर्स, आगरा,पेज13।
4. भगदीकर, पी. एस. (2019) रेलेवेन्स ऑफ एन्शियट इण्डियन पोलिटिकल थॉट विद स्पेशल रेफरेन्स टू महाभारत संशोधन, 8, पेज 141–146.
5. पांडे, पी. (2019ए). राजधर्म इन महाभारतः विद स्पेशल रेफरेन्स टू शांति पर्व. डीके प्रिंटवर्ल्ड (पी) लिमिटेड,।
6. फ्रांसिस बुडकुले, के. (2010) महाभारत मिथ्स इन कन्टेम्पोरेरी राइटिंग्स चैलेन्जिग आइडियॉलॉजी,।
7. पारेख, बी. (1992). द पॉवर्टी ऑफ इण्डियन पोलिटिकल थियोरी, हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थोट, 13(3), 535–560.
8. सिंह. एस. पी. (2015) कॉन्सेप्ट ऑफ राजधर्म इन आदि काव्य इन रामायण एण्ड महाभारत इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 61 (1), 132–138, 18.।

IJNRD
Research Through Innovation